आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:01-09-14

विश्व कि सर्व आत्माओं को इस कलयुगी दुनिया से मुक्त कर मुक्तिधाम ले जाने वाले, परमपिता-परमात्मा, मीठे-मीठे शिवबाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - तुमने सारे कल्प में आलराउन्ड पार्ट बजाया, अब पार्ट पूरा हुआ घर चलना है.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को बार-बार अपने ऑरिजिनल घर, शांतिधाम अथवा मुक्तिधाम को याद दिलाया जिसे कि हम आत्माओं को पुरानी दुनिया से वैराग्य हो और नई दुनिया में जाने के लिए पुरुषार्थ करें.

बाबा ने जितनी बार हमें स्वीट होम की याद दिलाई उसे ही फिरसे रिपिट करेंगे इस फिलिंग के साथ कि बाबा मुझे अपने घर ले जा रहे है तो बाबा कि, घर कि और वर्से कि याद हमें पक्की होती जायेंगी.

- रुहानी बच्चों से रुहानी बाप पूछ रहे हैं - मीठे-मीठे बच्चों, तुम्हें अपना घर शांतिधाम याद है? भूल तो नहीं गये हो? अब तुम्हारा ८४ का चक्र पुरा हुआ, कैसे पुरा हुआ है यह भी तुम समझ गये हो. सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक ऐसे और कोई तुम्हें यह पुछ न सके.

- मीठे-मीठे लाडले बच्चों से बाबा पूछते हैं, अब घर चलना है ना? घर चलकर फिर सुखधाम में आना है. यह हे पुरानी दुनिया, दुखधाम. अब इस दुख से मुक्त हो, जाना है मुक्तिधाम. मुक्तिधाम अथवा शांतिधाम जैसे कि सामने खड़े हैं. वह है धर. फिर तुम नये विश्व में आयेंगे, जहॉ पवित्रता, सुख और शांति भी होगी.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चे ही शांतिधाम, सुखधाम को जानते हो और कोई नहीं जानते. तुम पहले सुखधाम में थे फिर दुखधाम में आये हो. सेकण्ड, मिनट, घण्टे, दिन, वर्ष बीत गये. अब ५ हजार वर्ष में बाकी कुछ ही दिन रहते हैं. फिर बाप तुम बच्चों को साथ ले जायेंगे. कहॉ? अपने धर. बाप बच्चों को स्मृति दिलाते रहते हैं.

- अब बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चे, अब तो तुम्हें अपने घर जाना है. यह है जीव-आत्माओं की दुनिया. वह है आत्माओं की दुनिया.

- बाप कहते है, यह घड़ी-घड़ी स्मृति में लाना चाहिए - हम दूर देश के रहने वाले हैं. हम आत्माओं का घर है ब्रह्मांड.

- बाप कहते है, यह भी तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए कि हम वहॉ रहते हैं, इस आकाश तत्व से पार जहॉ सूर्य-चांद भी नहीं होते. तुम वहॉ के रहने वाले यहॉ आये हो पार्ट बजाने. ८४ जन्मो का पार्ट बजाते हो. तुम ही आलराउन्डर, आदि से अन्त तक पार्ट बजाते हो. अब तुम्हारा पार्ट पूरा हुआ, वापस घर चलना हैं.

- रुहानी बाप कहते है, रुहानी पण्डे तो तुम हो ना. सबको रुहानी घर का रास्ता बताने वाले. वह है तुम आत्माओं का रुहानी घर. रुह वहॉ से नीचे आकर जन्म लेकर पार्ट बजाती है. यह बाते तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते.

- बाबा कहते है, वहॉ तुम सब मेरे साथ परमधाम में रहते हो. वह है तुम्हारा आत्माओं का घर. आत्माये तो सब एक जैसी है. बाकी शरीर एक न मिले दूसरे से.

- बाबा कहते है, दिन-प्रतिदिन तुम याद कि यात्रा में पक्के होते जायेंगे. फिर अन्त में तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा. सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी. फिर यह नौकरी आदि याद नहीं आयेगी. मरेंगे ऐसे जैसे बैठे-बैठे हार्टफेल होते है. दुख की बात नहीं. बाप को जान लिया है तो स्वर्ग के मालिक बन ही जायेंगे. बाप कहते है तुम्हारा तो यह हक है बाप से वर्सा लेने का.

शुक्रिया बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.